हरित क्रान्ति की सफलता के लिए सुझाव

हरित क्रान्ति की सफलता के लिए निम्नांकित सुझाव दिए जा सकते हैं :

(1) **हरित क्रान्ति का विस्तार**—हरित क्रान्ति की सफलता के लिए सुझाव दिया जाता है कि इसका विस्तार किया जाए जिससे कि यह सम्पूर्ण देश में एक समान रूप से लागू हो सके। साथ ही नयी-नयी फसलों को इसके अन्तर्गत लिया जाना चाहिए विशेष रूप से चावल व दालें। इनके अतिरिक्त अन्य फसलें; जैसे कपास, गन्ना, तिलहन, जूट, आदि को भी इसके अन्तर्गत लिया जाना चाहिए।

(2) **सिंचाई के साधनों का विकास**—हरित क्रान्ति की सफलता के लिए सिंचाई साधनों का विकास किया जाना चाहिए। इसके लिए सरकार दो प्रकार से सहायता कर सकती है। एक तो छोटे व मध्यम किस्म के

Scanned with CamScanner

कृषकों को ऋण प्रदान कर सकती है जिससे कि वे अपने खेतों में नलकूप व पम्पिंग सेट लगा सकें। दूसरे, सरकार को स्वयं ही नहरें व अन्य सिंचाई साधनों में वृद्धि करनी चाहिए।

(3) **छोटे कृषकों को हरित क्रान्ति के क्षेत्र में लाया जाए**—छोटे कृषकों को भी हरित क्रान्ति के क्षेत्र में लाया जाना चाहिए। इसके लिए (i) भूमि सुधार कार्यक्रमों को तेजी से लागू किया जाना चाहिए। (ii) छोटे कृषकों को विभिन्न कृषि इनपुट क्रय करने के लिए साख सुविधाएं दी जानी चाहिए। (iii) उनको कृषि यन्त्र किराए पर मिलने की सुविधा होनी चाहिए। (iv) छोटे कृषकों को सहकारी कृषि समितियों में गठित हो जाने के लिए बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

(4) **व्यापारिक फसलों को हरित क्रान्ति में शामिल करना**—अभी तक खाद्यान्नों को ही हरित क्रान्ति में शामिल किया गया है उसमें भी गेहूं का ही बोलबाला है। इसीलिए कुछ विद्वान इस क्रान्ति को 'गेहूं की क्रान्ति' का ही नाम देते हैं। अतः सुझाव दिया जाता है कि अन्य खाद्यान्नों व व्यापारिक फसलों; जैसे कपास, पटसन, गन्ना, तिलहन, चावल, आदि को भी इसमें शामिल किया जाना चाहिए।

(5) **एकीकृत फार्म नीति**—हरित क्रान्ति के लिए एकीकृत फार्म नीति अपनायी जानी चाहिए जिससे कि फर्म तकनीक व आदानों के मूल्यों के सम्बन्ध में एक उचित नीति अपनायी जा सके तथा किसानों को उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक दवाइयां तथा मशीनें एवं उपकरण उचित मूल्य पर एवं उचित समय पर मिल सकें। इसके अतिरिक्त सरकार के द्वारा उचित मूल्य पर कृषि उत्पादन क्रय करने के लिए भी गारण्टी दी जानी चाहिए।

(6) **कृषि वित्त की सुविधा**—किसानों को हरित क्रान्ति से लाभ उठाने के लिए आवश्यक वित्तीय सुविधाएं भी दी जानी चाहिए जिससे कि वे आवश्यक उन्नत बीज, रासायनिक खाद, आधुनिक कृषि उपकरण क्रय कर सकें।

(7) **संस्थागत परिवर्तनों को प्रोत्साहन**—हरित क्रान्ति से लाभ प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि संस्थागत परिवर्तनों को प्रोत्साहित दिया जाए। इसके लिए कृषि जोतों का रिकॉर्ड तैयार किया जाए। बंटाईदारों को स्वामित्व अधिकार दिलाए जाएं। सीमा-निर्धारण के फलस्वरूप प्राप्त भूमि का वितरण भूमिहीन कृषकों में किया जाए। चकबन्दी को प्रभावी बनाया जाए। जोतों के विभाजन पर प्रभावी रोक लगायी जाए।

(8) **ग्रामीण रोजगार अवसरों में वृद्धि**—हरित क्रान्ति से कुछ श्रमिकों के बेकार हो जाने की सम्भावना है। अतः इसके लिए सुझाव दिया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली पहुंचाने की व्यवस्था की जाए जिससे कि वहां ग्रामीण उद्योग-धन्धे आधुनिक रूप लेकर पनप सकें और इन बेकार श्रमिकों को रोजगार मिल सके।

क्या अब तक प्राप्त कृषि विकास उचित है?

विभिन्न योजनाओं के फलस्वरूप कृषि में काफी विकास हुआ है। (1) कुल कृषि क्षेत्र बढ़ा है, (2) फसल के स्वरूप में परिवर्तन आया है, (3) सिंचित क्षेत्र बढ़ा है, (4) रासायनिक खादों का उपयोग बढ़ा है, (5) कृषि यन्त्रों का उपयोग होने लगा है **लेकिन इन सब बातों के होते हुए भी अभी कृषि विकास उचित स्तर तक नहीं पहुंच पाया है क्योंकि** (1) यहां प्रति हेक्टेअर कृषि उत्पादन अन्य विकसित देशों की तुलना में कम है। (2) अनेक कृषि उत्पादनों को आयात करना पड़ता है क्योंकि उनका उत्पादन मांग की तुलना में अभी कम है। (3) सिंचित क्षेत्रफल 37 प्रतिशत है जो बहुत कम है। (4) कृषि में यन्त्रीकरण भी कम है जिससे लागत अधिक आती है। (5) कृषकों को वित्तीय सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलती हैं जिससे विकास में बाधा उत्पन्न होती है। **अतः इस बात की आवश्यकता है कि कृषि का और विकास किया जाए।**

Scanned with CamScanner